IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्वामी विवेकानंद की योग दृष्टि एवं उसका व्यावहारिक अनुप्रयोग

प्रो० जितेंद्र कुमार शर्मा

आचार्य, योग विभाग

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय वि०वि०, अमरकंटक, (म०प्र०)

आलेख सार –

स्वामी विवेकानंद समकालिक भारत के महानतम योगियों में अग्रपांक्तेय हैं। उन्होंने प्राचीन भारत में प्रचलित लगभग सभी योग पद्धतियों – कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग, राजयोग का अपने जीवन में प्रयोग किया। स्वामी विवेकानंद का वैशिष्ट्य योग के व्यावहारिक अनुप्रयोग को लेकर है। योग विद्या केवल शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य सहित वैयक्तिक मुक्ति का साधन मात्र न रह जाए बल्कि योग की आध्यात्मिक चेतना मानव मात्र के योगक्षेम की वाहक बने अर्थात् योग सर्वमुक्ति का साधन बने। योगी गिरि-कन्दराओं में बैठकर केवल योग साधना न करें बल्कि उस योगिकज्ञान और साधनाजन्य शक्ति का जनसामान्य के लौकिक एवं पारलौकिक अभ्युदय हेतु प्रयोग करें। योग के क्षेत्र में स्वामी विवेकानंद का यही अवदान और वैशिष्ट्य है। एक दार्शनिक एवं चिंतक के रूप में स्वामी विवेकानंद ने भारत के गली-कूचों और जनसाधारण में परिव्याप्त बुराइयों को बहुत निकट से अनुभव किया और उसके निर्मूलन हेतु अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा दी। हिन्दू समाज में फैली हुई जाति व्यवस्था जन्य छुआछूत की भावना के आधार पर आत्मसाक्षात्कार कैसे संभव है? जब जड़ प्रकृति से लेकर वनस्पति जगत, पशु जगत और मानव जगत उसी परात्पर सत्ता के प्रकाश से प्रकाशित है। परम ब्रह्म की वास्तविक अभिव्यक्ति हैं तो आपस में छुआछूत या ऊँच-नीच का भेद कैसा। योगी के लिए सम्पूर्ण शरीति आत्मवत है। चराचर जगत आत्म का ही विस्तार है।

योगिक चेतना की भावभूमि में प्रतिष्ठित होते ही जातिगत एवं धार्मिक विद्वेष शून्य हो जाता है। इसी कारण स्वामीजी कहते हैं – ब्राह्मणों को आचार्य शंकर की प्रखर मेधा और तर्कशक्ति तथा तथागत के विशाल हृदय की आवश्यकता है। तभी धर्म की सच्ची स्थापना हो पाएगी। सभी धर्म आपस में समान हैं तथा समान रूप से आदरणीय हैं।

स्वामीजी विवेकानंद की योगिक चेतना पूरब और पश्चिम की दो परस्पर विरोधी संस्कृतियों का विरोध भाव नकार देती है। वैज्ञानिक प्रविधि के प्रयोग द्वारा जहाँ वे भारतीयों को दुःख दारिद्रय से मुक्ति दिलाना चाहते थे वहीं पश्चिमी देशों में भारतीय अध्यात्म का आलोक भी प्रसारित करना चाहते थे।पूरब और पश्चिम के मिलन में ही मानवता का कल्याण है।

आत्मस्वरूप और आत्मशक्ति से विस्मृत, निराश एवं हताश युवाओं द्वारा राष्ट्र का अर्चन कैसे किया जा सकता है? "शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः" का नारा देते हुए स्वामीजी ने प्रसुप्त भारतीयों को जाग्रत कर दिया। उनके हृदय में भारत माता के प्रति स्वर्गादपि गरीयसी का भाव भर दिया। आप ने अपनी प्रखर योगरश्मि के माध्यम से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को आलोकित किया। निष्प्राण कायर युवाओं में सिंह विक्रम का भाव भरा।

बीज शब्द –

आत्यंतिक निवृत्ति – दुःखों से सर्वकालिक मुक्ति, ऐसी मुक्ति जिससे दुःखों के पुनर्प्राप्ति की संभावना न हो

युगपद – साथ-साथ

उद्घोषक – उच्च स्वर में बार-बार घोषणा करने वाला

राजयोग – योग का वह मार्ग जिसमें इंद्रिय संयम और मन के परिष्कार या विकास द्वारा आत्म साक्षात्कार किया जाता है।

पर्यवसान – समापन

गवेषणात्मक – शोध परक

सर्वतोभावेन – हर प्रकार से

साधन चतुष्टय – वेदान्तीय ज्ञान हेतु चार साधनों की सिद्धि को अधिकारी शिष्यता के रूप में माना गया है। नित्यानित्य वस्तुविवेक, इहामुत्रार्थ भोगविराग, शमदमादि साधन संपत, मुमुक्षत्व।

समवेत – इकट्ठा होकर

आत्मदीपो भव – अपना प्रकाश स्वयं बनो। स्वावलंबी बनो

अपरिग्रह – आवश्यकता से अधिक धन का संग्रह न करना

भूमिका –

मानव सभ्यता का इतिहास दुःखों से आत्यंतिक निवृत्ति एवं परमानन्द की प्राप्ति हेतु किए गए प्रयासों का इतिवृत्त है। इस हेतु विविध देशकाल में विभिन्न संस्कृतियों के अंतर्गत ज्ञान की विविध धाराओं और प्रविधियों की खोज की गयी। योग विद्या आर्यावर्त की आर्ष परंपरा द्वारा अन्वेषित विश्व सभ्यता को प्रदान किया गया वह प्रथम और महानतम उपहार है जो शरीर और मन को युगपद स्वस्थ रखते हुए आत्यंतिक दुःख निवृत्ति का मार्ग प्रशस्त करता है। योग, वैयक्तिक चेतना का परात्पर चेतना से मिलन का एक माध्यम है। लक्ष्य और उसकी प्राप्ति के साधनों – इन दोनों को मिलाकर योग कहा जाता है। जहाँ तक स्वामी विवेकानंद का प्रश्न है, आप उस सनातन आर्ष परंपरा के संवाहक हैं जो अपने अंदर कई विचारों और संस्कृतियों को समेटे हुई है और इसके बावजूद युगों-युगों से निरंतर अग्रसर है। स्वामी विवेकानंद इसी परंपरा के आधुनिक उद्घोषक हैं। स्वामी विवेकानंद की योग साधना में भारतवर्ष में प्राचीन काल से प्रचलित समस्त योग पद्धतियों का समाहार है। जहाँ एक तरफ कर्म साधन के क्षेत्र में वे एक महान कर्मयोगी हैं वहीं दूसरी तरफ भक्ति के माध्यम से ईश्वरीय स्वरूप का साक्षात्कार करने वाले महान भक्त भी हैं। राजयोग की कठिन साधना द्वारा मन को संयमित और विकसित करने वाले राजयोगी हैं वहीं ज्ञानयोग के माध्यम से आत्म साक्षात्कार करने वाले श्रेष्ठ ज्ञानयोगी भी हैं। जहां तक मेरा मन्तव्य है विवेकानंद की महत्ता उनकी वैयक्तिक योग साधना के कारण नहीं है बल्कि उनकी महत्ता वेदान्त प्रसूत योग दृष्टि के व्यावहारिक अनुप्रयोग के कारण है। वैयक्तिक जीवन हो या पारिवारिक, सामूहिक हो या सामाजिक, राष्ट्रीय हो या अंतर्राष्ट्रीय, लौकिक हो या लोकोत्तर मानव जीवन का कोई ऐसा आयाम या क्षेत्र नहीं है जिसमें स्वामीजी ने अपनी योग साधनाजन्य दिव्य ज्ञान का प्रयोग न किया हो। दुःखी मानवता के दुःखों को दूर करने के लिए जहाँ उनके हृदय में एक तरफ बुद्ध की करुणा प्रवाहित थी वहीं सामाजिक और धार्मिक जीवन की बुराइयों के मूलोच्छेदन हेतु उन्होंने आचार्य शंकर के दिव्य तार्किक मेधा का भी प्रयोग किया। नर सेवा से नारायण सेवा और समाज सेवा से ईश्वर सेवा में उनकी दिव्य योग दृष्टि का पर्यवसान होता है। उनकी योग साधना का लक्ष्य एक मुक्ति से सर्वमुक्ति था। समकालीन भारत में स्वामीजी से महान कोई ऐसा योगी नहीं पैदा हुआ जिसने योग साधनाजन्य दिव्य ज्ञान का व्यावहारिक अनुप्रयोग किया हो। उन्होंने योग विद्या को गिरि-कन्दराओं से निकालकर जनसामान्य के योगक्षेम का वाहक बना दिया। वे कहते थे "बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय संन्यासी का जन्म हुआ है ....दूसरों के लिए प्राणों का बलिदान देने, जीवों के गगनभेदी क्रंदन का निवारण करने, विधवा के अश्रु पोंछने, पुत्र-वियोग से शोक-संतप्त प्राण में शांति का संचार करने, अज्ञ तथा अंत्यजों को जीवन संग्राम के लिए उपयोगी बनाने, सभी का ऐहिक और पारमार्थिक मंगल करने तथा ज्ञान-आलोक से सबके अंदर प्रसूत ब्रह्म सिंह को जाग्रत करने के लिए ही जगत में संन्यासी का जन्म हुआ है।[1]

विवरण –

शोध आलेख के प्रथम भाग में स्वामी विवेकानंद की योग दृष्टि, उनके द्वारा व्यवहृत योग पद्धतियों की संक्षेप में विवेचना की जाएगी। आलेख के द्वितीय भाग में सविस्तार स्वामी विवेकानंद की योगसाधना के व्यावहारिक अनुप्रयोग की गवेषणात्मक मीमांसा की जाएगी।

योग वह साधन पद्धति है जिसके द्वारा परात्पर चेतना का साक्षात्कार किया जाता है। यहाँ लक्ष्य और उसकी प्राप्ति के साधनों – इन दोनों को मिलाकर योग कहा जाता है। मनुष्य अपनी प्रकृति और स्वभाव के अनुसार किसी भी योग पद्धति की साधना कर परम तत्त्व का साक्षात्कार कर सकता है। भारतीय आर्ष परंपरा में प्रचलित लगभग सभी प्रमुख योग पद्धतियों का स्वामीजी ने अपने जीवन में व्यवहार किया। प्रमुख योग पद्धतियाँ और उनसे संबंधित विवरण निम्नवत् है -

1. कर्मयोग –

इसके अनुसार मनुष्य कर्म और कर्तव्य के द्वारा अपने ईश्वरीय स्वरूप की अनुभूति कर सकता है। कर्म के प्रति निष्ठावान लोगों को कर्मयोग की साधना करनी चाहिए। परंतु यह कर्म निष्काम भाव से भगवदर्थ समर्पित होकर जनकल्याण के लिए करना चाहिए। स्वार्थ त्याग और लोक कल्याण वृत्ति कर्मयोगी की प्रमुख विशेषता है। चूँकि कर्म करने में उसकी कोई आसक्ति नहीं होती है। कर्तव्यतया कर्म करने के कारण वह कर्मफल में नहीं बँधता।

2. भक्तियोग –

भावना प्रधान व्यक्तियों का भक्ति के माध्यम से ब्रह्म से एकत्व प्राप्त करने का सहज मार्ग भक्ति योग है। ईश्वर साक्षात्कार का यह सरलतम और निश्चिततम मार्ग है। इस मार्ग में पूर्णता प्राप्त करने के लिए ईश्वर के प्रति प्रेम ही एक सारभूत वस्तु है। विवेकानंद के अनुसार प्रेम की पाँच अवस्थायें होती हैं –

प्रथम अवस्था – प्रेम की वह अवस्था है जिसमें मनुष्य सहायता चाहता है और इस कारण उसमें भय का अंश भी विद्यमान रहता है।

द्वितीय अवस्था – इस अवस्था में भक्त ईश्वर को पिता के रूप में देखता है। उसके मन में "पिताऽसि लोकस्य चराचरस्य" का भाव रहता है।

तृतीय अवस्था – प्रेम की इस तृतीय अवस्था में ईश्वर को माता के रूप में देखा जाता है। यहाँ मातृदेवो की भावना से प्रेम निर्झरणी का प्रवाह होता है।

चतुर्थ अवस्था – प्रेम की चतुर्थ अवस्था जहाँ प्रेम, प्रेम के लिए किया जाता है।

पंचम अवस्था – प्रेम की पंचम अवस्था दिव्य मिलन की अवस्था है। इसमें एकत्व या परा चेतना प्राप्त होती है।

3. राजयोग –

इस सिद्धांत के अनुसार "मनः एव कारणानाम् बंधन मोक्षयोः"। जिस प्रकार मनुष्य के मन में नाना प्रकार की वासनाएँ और अभाव विद्यमान है उसी प्रकार उसके भीतर ही उन वासनाओं और अभावों से उबरने की शक्ति भी विद्यमान है। वस्तुतः इंद्रिय संयम और मन का विकास ही राजयोग है। मन में निहित शक्ति का नियोंजन कर मनुष्य को उसका आत्म साक्षात्कार कराना ही राजयोग है। स्वामी विवेकानंद महर्षि पतंजलि द्वारा प्रतिपादित अष्टांग योग को राजयोग सिद्धि का साधन मानते है।

4. ज्ञानयोग – आत्म साक्षात्कार के द्वारा परम तत्त्व की अनुभूति का मार्ग ज्ञानयोग है। अविद्या से सर्वतोभावेन मुक्ति ही ज्ञान योग है। ज्ञानयोग की साधना हेतु साधन चतुष्टय की पात्रता तदनंतर श्रवण, मनन, निदिध्यासन की सिद्धि अनिवार्य है।

स्वामी विवेकानंद की स्पष्ट मान्यता थी कि योग की किसी भी पद्धति को भले ही सिद्ध कर लिया जाए परंतु उससे यदि दुःखी मानवता के कष्टों का निवारण न किया जा सके तो वह व्यर्थ है। वस्तुतः उनकी योगिकसाधना और ज्ञान का अंतिम उद्देश्य प्राणिमात्र के कष्टों का निवारण करना ही था। वे कहते थे "योग के विषय में यदि कोई गुप्त या रहस्यमय बात हो तो उसे छोड़ देना चाहिए। रहस्य व्यापार मानव मस्तिष्क को दुर्बल बना देता है। इसने योग को जो कभी एक उच्चतम विज्ञान था, बिल्कुल नष्ट कर दिया"।[2]

योगी को मानवता के दुःखों से सद्यः मुक्ति हेतु तत्काल प्रयास करना चाहिए। विवेकानंद समकालीन भारत के उन महानतम योगियों में अग्रपांक्तेय है जिन्होंने अपनी सम्पूर्ण योगिकसाधना और शक्ति का प्रयोग जनसामान्य के दुःखों के निवारण हेतु प्रयोग किया। योग का व्यावहारिक जीवन में अनुप्रयोग उनका महानतम प्रदेय है। उन्होंने हिमालय की गिरि कन्दराओं में छुपी हुई वैयक्तिक मुक्ति साधक भागीरथी रूपी योग सरिता को जनसामान्य के कल्याणार्थ, लोकसंग्रहार्थ प्रवाहित कर दिया। आत्मनोमोक्षार्थम एकांतसेवी योगियों पर कटाक्ष करते हुए स्वामीजी कहते हैं – जो मनुष्य यह कहता है कि संसार को पूर्ण मंगलमय हो जाने दो, तब मैं कार्य करूँगा और आनंद भोगूँगा उसकी बात उसी व्यक्ति की तरह है जो गंगा तट पर बैठकर कहता है कि जब इसका सारा पानी समुद्र में पहुँच जाएगा तब मैं इसके पार जाऊँगा।[3]

योग के व्यावहारिक अनुप्रयोग की कसौटी पर यदि स्वामी विवेकानंद का मूल्यांकन किया जाए तो सार रूपेण यही कहा जा सकता है कि स्वामी विवेकानंद के अंतस में आचार्य शंकर की प्रखर प्रज्ञा और महात्मा बुद्ध की करुणा का युगपद् समावेश है। योग विद्या को 'आत्मनः मोक्षार्थम् जगत् हिताय च' हेतु प्रयोग करने वाले स्वामी विवेकानंद को समकालीन विश्व के महानतम योगी के रूप में युगों-युगों तक याद किया जाएगा। आइए सांप्रतिक समस्याओं के समाधान हेतु स्वामी विवेकानंद के योगिकसाधना के अनुप्रयोग की मीमांसा करें –

जाति-पाँतिऔर छुआछूत की विद्वेषाग्नि से जलता हिन्दू समाज अंदर से खोखला और निर्वीर्य होता जा रहा है।

श्रम वैशिष्ट्य "Specialization of Labour" की वैज्ञानिक भावना से निर्मित वर्ण व्यवस्था आज खूनी जातीय संघर्ष में तब्दील हो चुकी है। स्वामीजी की ब्राह्मी चेतना 'सर्वं खलु इदं ब्रह्म' का उद्घोष करते हुए कहती है – यदि तुम आर्य, द्रविण ब्राह्मण और अब्राह्मण जैसे तुच्छ विषयों को लेकर तू-तू-, मैं मैं करोगे, आपस में लड़ोगे तो भारत का विनाश निश्चित है।अरे मूर्ख जनों! तुम वेदों और उपनिषदों की उन ऋचाओं को भी विस्मृत कर गए -

अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं-रूपं प्रतिरूपो बभूव।

एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश्च ॥[4]

जिस प्रकार एक ही अग्नि जगत में प्रविष्ट होकर अनेक रूपों में परिवर्तित हो गयी उसी प्रकार एक ही ब्राह्मी सत्ता विविध जीवों के रूप में प्रकट होती है। संसार की प्रत्येक वस्तु ब्रह्म की ही वास्तविक अभिव्यक्ति है। यह ठीक है कि अमीबा से गौतम बुद्ध की अभिव्यक्ति हुई पर चूँकि जगत में ऊर्जा की सम्पूर्ण मात्रा स्थिर है अतः अमीबा भी एक प्रकार का गौतम बुद्ध ही रहा होगा। जगत की विविधता को पारिभाषित करते हुए उन्होंने कहा था कीटाणु ब्रह्मांडीय ऊर्जा (परम सत्ता) को निम्नतम मात्रा में अभिव्यक्त करता है। मनुष्य उसी ऊर्जा को कुछ अधिक मात्रा में अभिव्यक्त करता है तथा कोई ईश्वरीय व्यक्ति उस ऊर्जा को अधिकतम मात्रा में अभिव्यक्त करता है।[5]

तुम अपनी ब्रह्मस्वरूपता को भूलकर जाति,धर्म,रूप,रंग,लिंग,भाषा वेशभूषा के अविद्याजन्य बंधन में बंध गए हो। यही तुम्हारे पतन और कमजोरी का कारण है। छुआछूत के कोढ़ ने तुमको ऐसा ग्रसित कर रखा है कि तुम सर्वशास्त्र मयी गीता के अमृत उपदेश को भी विस्मृत कर गये-

विद्या विनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनी |

शुनि चैव श्वपाके च पंडिता : समदर्शिन :॥[6]

कोऽहं भो! मनुष्य का सच्चा स्वरूप क्या है? स्मरण करो उस वेदवाणी को, अभ्यर्थना करो उस वैदिक चिंतन की, जिसने मनुष्य को ब्रह्मत्व प्रदान किया है –

न मृत्युर्नशङ्का न मे जाति भेदः

पिता नैव मे नैव माता न जन्म

न बन्धुर्नमित्रं गुरुर्नैव शिष्यः

चिदानन्द रूपः शिवोऽहं शिवोऽहं।[7]

आओ करोड़ों हिंदुओं आओ हम समवेत होकर अथर्ववेद की इस ऋचा को पुनः गुनगुनाएँ –

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते।।[8]

आपसी विद्वेष और घृणा भाव को झटक फेकें –

ॐ सहनाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै।

तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥[9]

धार्मिक विद्वेषाग्नि से संतप्त लोकजीवन सांप्रतिक विश्व की ज्वलंततम समस्या है। इस्लामिक आतंकवाद से प्रकंपित दुनिया तृतीय विश्वयुद्ध के मुहाने पर खड़ी है। स्वामी विवेकानंद की परात्पर चेतना धार्मिक भेदभाव और विद्वेष को सर्वथा नकारकर समरस समाज की स्थापना का आह्वान करती है। धर्म का सच्चा स्वरूप क्या है? पुनः उपनिषदों का उद्धरण देते हुये स्वामीजी कहते हैं-

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रेऽस्तं गच्छन्ति नामरूप विहाय।
तथा विद्वान् नामरूपाद् विमुक्तः परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ॥[10]

सभी धर्म मनुष्य को परम लक्ष्य तक पहुँचाने में समर्थ हैं। जितने ही अधिक संप्रदाय होते हैं मनुष्य की भगवद्भावना को सफलतापूर्वक जाग्रत करने के उतने ही सुयोग मिलते हैं। परम तत्त्व या ईश्वर को हम कैसे प्राप्त कर सकते है? इस प्रश्न के उत्तर में भारतीय जीवन प्रणाली में तीन प्रकार की निष्ठाओं का वर्णन है –

1. श्रुति निष्ठा 2. तर्क निष्ठा 3. अनुभव निष्ठा

स्वामी विवेकानंद की योग दृष्टि इन तीनों निष्ठाओं में अपूर्व समन्वय स्थापित करती है। इस्लाम और इसायत विशुद्ध श्रुति निष्ठा पर आधारित धर्म हैं। इसी कारण उनके धर्मग्रंथों या धर्माधिकारियों के विरुद्ध कोई बात कहने पर वे मरने-मारने पर उतारू हो जाते हैं। सर तन से जुदा करने की धमकी देते हैं। जबकि आर्यावर्त की आर्ष परंपरा तर्कसम्मत श्रुति निष्ठा या उससे भी श्रेष्ठतर अनुभव निष्ठा – जिसे दिव्य अनुभूति या ऋतंभरा प्रज्ञा की संज्ञा दी गयी, में विश्वास करती है। यह वह देश है जहां स्याद् वाद के रूप में जैनियों की ज्ञानमीमांसा को सार्वजनिक स्वीकृति प्रदान की गयी।

न मे जिने विश्वासः न द्वेषः कपिलादिषुः

युक्तिमद वचनं यस्य तद्वाक्यं ग्राह्यं मम

इस देश के कण-कण और जन-जन में विद्यमान धार्मिक सहिष्णुता तो चार्वाकों को भी वेदनिन्दा की निद्य स्वतंत्रता प्रदान करती है –

चत्वारो वेद कर्तारो धूर्त भण्ड निशाचराः।

सहिष्णुता का भाव यहाँ की संस्कृति और जनमानस में ऐसा रचा-बसा है कि गुरुर्ब्रह्म, गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः का शंखनाद करने वाला भारतीय धर्म एवं दर्शन 'दोषावाच्यागुरोरपि' का न केवल समर्थन करता है बल्कि शिष्य द्वारा सही बात कहने पर उसके मत को गुरुमत की संज्ञा भी देता है।

धार्मिक विद्वेष के कारणों की मीमांसा करते हुये स्वामी जी का मन्तव्य है –

धर्म के तीन भाग होते है – 1. दार्शनिक भाग 2. पौराणिक भाग 3. आनुष्ठानिक भाग

धार्मिक विद्वेष का कारण किसी एक भाग पर जोर देना है जबकि तीनों भाग धर्मध्वजा फहराने में समान रूप से सहायक और संपोषक हैं।

मंदिर और गिरजा,पोथी और पूजा ये धर्म की शिशुशाला मात्र है जिनके द्वारा आध्यात्मिक शिशु पर्याप्त बलवान होता है। धर्म न मतों में है न पंथों में न तार्किक विवाद में। धर्म या भक्ति का अर्थ है आत्मा की ब्रह्म स्वरूपता को जान लेना।

I have understood this as the real truth – God is present in every Jiva there is no other God besides that. Who serves Jiva, serves God indeed.[11]

हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म में समन्वय स्थापित करते हुए स्वामीजी कहते हैं – हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म को बिना नहीं रह सकता और बौद्ध धर्म बिना हिन्दू धर्म के। बौद्ध ब्राह्मणों के दर्शन और मस्तिष्क के बिना नहीं ठहर सकते और न ब्राह्मण बौद्धों के विशाल हृदय के बिना। बौद्ध और ब्राह्मण के बीच यही पार्थक्य भारतवर्ष के पतन का कारण है। यही कारण है कि आज भारतवर्ष में तीस करोड़ भिखमंगे निवास करते हैं। सार रूपेण कहा जा सकता है कि यदि हमें आत्म स्वातन्त्र्य और आत्मज्ञान की शिक्षा लेनी है तो हिन्दू धर्म को, हिन्दू अध्यात्म को अंगीकार करना पड़ेगा। मातृत्व और समानता के लिए तथागत की करूणा का प्रसार करना पड़ेगा।

स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व स्वामी विवेकानंद की वेदान्त प्रसूत योगिकचेतना की अपूर्व देन है।

विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय – स्वामी विवेकानंद की सबसे बड़ी विशेषता योगिकज्ञान का मानवता के योगक्षेम हेतु जीवन के सभी क्षेत्रों में प्रयोग। मानव जीवन या संस्कृति का कोई ऐसा पक्ष नहीं है जो उनकी ज्ञानरश्मियों से आलोकित न हुआ हो। विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय करके स्वामी जी ने पूरब और पश्चिम की परस्पर विरोधी संस्कृतियों को मिलाकर मानो विश्ववारा संस्कृति का निर्माण कर दिया फलतः माताभूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः का उद्घोष कर दिया।

The west had tried to conquer external nature and the East had tried to conquer internal nature. Now East and West must work hand in hand for the good of each other, without destroying the special characteristics of each. The West has much to learn from the East and the East has much to learn from the West. In fact, the future has to be shaped by a proper fusion of the two ideals. Then there will be neither East nor West but one Humanity.[12]

संसार में जड़ नाम की कोई सत्ता नहीं है। जड़ जगत परात्पर चेतना की न्यूनतम अभिव्यक्ति है। सम्पूर्ण संसार (जड़ प्रकृति) परात्पर चेतना द्वारा ही संचालित है।

मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम् ।
हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते ॥[13]

यो देवोऽग्नौ योऽप्सु यो विश्वं भुवनमाविवेश।
य ओषधीषु यो वनस्पतिषु तस्मै देवाय नमो नमः॥[14]

यह ठीक है कि अमीबा से गौतम बुद्ध की अभिव्यक्ति हुई पर चूँकि जगत में ऊर्जा की सम्पूर्ण मात्रा स्थिर है अतः अमीबा भी एक प्रकार का गौतम बुद्ध ही रहा होगा। विज्ञान की प्रविधि और आविष्कार भूखी मानवता को भूख से छुटकारा दिलाएगी और भारतीय अध्यात्म उसे निःश्रेयस की सिद्धि दिलाएगा।

भटकते युवा मानस के मार्गदर्शन हेतु आज विवेकानंद के मार्गदर्शन एवं प्रेरणा की अति आवश्यकता है –

नशे की गिरफ्त में मदहोश, लक्ष्यभ्रष्ट, गत सामर्थ्य युवाओं तथा नारी तन की आग में अपना ओजस, तेजस और ब्रह्मस स्वाहा करने वाले युवाओं को उद्बोधित करते हुए स्वामीजी कहते है –

शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः। हे अमृत पुत्रों! सिंह पराक्रम को अर्जित करों। इस मिथ्याभ्रम को झटक कर दूर फेंक दो कि आप भेड हैं। आप हैं आत्मा, अखर, अमर, अविनाशी नित्य और आनंदस्वरूप। जिस दिन भारत के युवाओं का सोया हुआ स्वाभिमान जाग जाएगा उसी दिन भारत पुनः विश्वगुरु के पद पर पुनः अभिषिक्त हो जाएगा।

नाभिषेको न संस्कार: सिंहस्य कृते मृगैः।

विक्रमार्जितराज्यस्य स्वयमेव मृगेंद्रता॥

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ॥

थके-हारे, अवसाद एवं कुंठाग्रस्त आत्महत्या करने वाले युवाओं के लिये गीता की मात्र इसी एक श्लोक में जीवन का सम्पूर्ण सार समाया है –

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप॥[15]

राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता की रक्षा हेतु युवाओं को आत्मोत्सर्ग हेतु बद्धपरिकर होना ही पड़ेगा। आगामी पचास वर्षों के लिए यह जननी जन्मभूमि भारत माता ही मानो आराध्य देवी बन जाए। तब तक के लिए हमारे मस्तिष्क से व्यर्थ के देवी-देवताओं के हट जाने से कुछ भी हानि नहीं है। अपना सारा ध्यान इसी एक ईश्वर पर लगाओ हमारा देश ही हमारा जागृत देवता है।

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

गर्व से पुकारकर कहो भारतवासी मेरा भाई है। बोलो अज्ञानी भारतवासी, दरिद्र भारतवासी, ब्राह्मण भारतवासी, चण्डाल भारतवासी सभी मेरे भाई हैं। भारतवासी मेरे प्राण हैं। भारत का समाज मेरी शिशुसज्जा, मेरे यौवन का उपवन और वार्धक्य की वाराणसी है। भारत की मिट्टी मेरा स्वर्ग है। हे गौरीनाथ! हे जगदम्बे! मुझे मनुष्यत्व दो, माँ मेरी कापुरुषता और दुर्बलता दूर कर दो। मुझे मनुष्य बनाओ।

उपसंहार –

स्वामी विवेकानंद समकालिक योगियों में अग्रपांक्तेय हैं, जिन्होंने अपनी योग चेतना जन्य अध्यात्म रश्मि से जीवन का प्रत्येक कोना आलोकित किया। उनका महानतम वैशिष्ट्य और अवदान इस संदर्भ में है कि उन्होंने गिरि कन्दराओं में छुपी हुई आत्मसेवित योग विद्या को जनकल्याणार्थ जनसामान्य में प्रचारित किया। उनकी योग विद्या एकमुक्ति से सर्वमुक्ति का मार्ग प्रशस्त करती हुई 'इदं न मम इदं ब्रह्मणाय' का उद्घोष करती हुई 'आत्मदीपो भव' के स्वावलंबन मंत्र में पर्यवसित होती है। स्वामीजी का योगिकचेतना 'ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्' का साक्षात्कार करते हुये 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्' से अनुप्राणित अपरिग्रह का आवाहन एवं आग्रह करती है। योगिकज्ञान का व्यावहारिक जीवन में अनुप्रयोग विवेकानंद की अप्रतिम विशेषता है। Utter no words of condemnation. Close your lips and let your hearts open. Workout the salvation of this land and of the whole world, each of you thinking that the entire burden is on your shoulders. Carry the light and the life of the Vedant to every door and rouse up the divinity that is hidden within every soul.[16]

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. सबके स्वामीजी (2012) संपादक रामकृष्ण मिशन इंस्टिट्यूट ऑफ कल्चर, गोल पार्क, कलकत्ता पृष्ठ 19
2. सक्सेना डॉ० लक्ष्मी (1983) समकालीन भारतीय दर्शन प्रकाशक उ०प्र० हिन्दी संस्थान लखनऊ पृष्ठ० 81
3. वही, पृष्ठ 72
4. कठोपनिषद् 2/2/9 अंतर्गत ईशादी नौ उपनिषद प्रकाशक – गोविंद भवन कार्यालय गीताप्रेस गोरखपुर
5. सक्सेना डॉ० लक्ष्मी (1983) समकालीन भारतीय दर्शन प्रकाशक उ०प्र० हिन्दी संस्थान लखनऊ पृष्ठ० 74
6. श्रीमद्भगवद्गीता (शांकर भाष्य) 5/18 गीताप्रेस गोरखपुर
7. निर्वाण शतकम (2023) – शंकराचार्य
8. ऋग्वेद X 191, गीताप्रेस गोरखपुर
9. श्वेताश्वतरोपनिषद – शांतिपाठ अंतर्गत ईशादि नौ उपनिषद प्रकाशक –गीताप्रेस, गोरखपुर (उ०प्र)
10. मुण्डकोपनिषद 3/2/8 अंतर्गत ईशादी नौ उपनिषद प्रकाशक –गीताप्रेस, गोरखपुर (उ०प्र)
11. Vivekanand: His call to the nation (2022) Advait Ashram. Kolkata 700014 Page-71
12. वही। पृष्ठ 31
13. श्रीमद्भगवद्गीता (शांकर भाष्य) 9/10 गीताप्रेस, गोरखपुर (उ०प्र)
14. श्वेताश्वतरोपनिषद 3/17 अंतर्गत ईशादी नौ उपनिषद, गीताप्रेस, गोरखपुर (उ०प्र)

15. श्रीमद्भगवद्गीता (शांकर भाष्य) 2/3 गीताप्रेस, गोरखपुर (उ०प्र)

16. Vivekanand: His call to the nation (2022) Publisher – Advait Ashram Kolkata Page 99.